कैलण्डर के विकास का इतिहास

इ.एस.आर. गोपाल

क्या यह अचरज की बात नहीं है कि 1917 की रूसी-क्रांति तो अक्टूबर में हुई थी मगर उसकी सालगिरह नवम्बर में मनाई जाती है। ऐसा कैसे? 1986 के पहले आधुनिक ओलम्पिक खेलों में भाग लेने अमरीकी एथलिटिक टीम 15 दिन का समय अभ्यास के लिए लेकर मिस्र पहुंची। लेकिन वहां पहुंचकर पता चला कि खेल तो अगले दिन ही होने वाले हैं। कहीं कुछ गड़बड़ लगती है। इन सब घटनाओं के पीछे की कहानी बहुत पुरानी है।

दिन, माह और साल

मानव को जिस चीज़ ने सबसे ज़्यादा प्रभावित किया, वह था सूरज का उगना और डूबना और इस दौरान पूरा आकाश पार करते हुए पूर्व से पश्चिम की ओर जाना। धीरे-धीरे लोगों ने अन्य प्रमुख आकाशीय पिण्डों पर ध्यान देना शुरू किया। जैसे चांद की कलाएं। लगभग दस हज़ार साल पहले जब लोगों ने गिनना सीखा तब यह स्पष्ट हुआ कि चांद की इस घट-बढ़ में एक नियमितता है। लगभग तीस दिनों में इस चक्र का दोहराव होता है। इसके बाद लोगों ने देखा कि ठण्डा और गर्म मौसम भी एक नियमित समय बाद आते हैं (लगभग 13 चन्द्र चक्रों के बाद)। यह कैलेण्डर बनने की शुरुआत थी। आज भी कई कैलेण्डर चन्द्र चक्रों पर आधारित होते हैं। गौरतलब है कि उस वक्त लोगों ने नियमितता तो पहचानी, पर इसके पीछे के कारणों को न समझ पाए।

इसके बाद की कहानी छह हज़ार साल पहले मिस्रवासियों ने लिखी। नील नदी उनका जीवन थी। उन्होंने पाया कि इस नदी में बाढ़ आने जैसी महत्वपूर्ण घटना नियमित रूप से साल में एक बार गर्मी के मौसम में होती है। तब तक गिनती का काम काफी बढ़ चुका था। गर्मी से गर्मी तक के साल को 360 दिनों और चन्द्र मास को लगभग 30 दिन का माना गया था। भूमध्यरेखीय देशों, मिस्र, बेबीलॉन, सुमेरिया, फोनेशिया और चाड आदि के लोग इसे मानते थे; एक वृत्त को 360 डिग्री में विभक्त करने के पीछे भी यही कारण है; हर दिन साल का 360 वां हिस्सा होना।

लगभग चार हज़ार साल पहले मिस्र के पुजारियों ने एक अहम काम किया। एक पुजारी ने देखा कि जब नील नदी में बाढ़ आना शुरू होती है सुबह का चमकीला तारा सिरियस मंदिर के सीध में पूर्व दिशा की ओर उगता था। उसने देखा कि दोपहर के वक्त ऊंचे खम्बे की परछाई में भी वैसे ही आवर्ती बदलाव आते हैं। उन्होंने यह भी पाया कि तारों की गति नदी की बाढ़ की अपेक्षा ज़्यादा सटीक थी। बाढ़ के आने में साल-दर-साल बदलाव हो सकते थे। अतः साल की अवधि तय करने हेतु तारों का अवलोकन ज़्यादा बेहतर तरीका पाया गया। इस तरह साल की अवधि 365 दिनों की हो गई। अगले हज़ार सालों में इसमें और सुधार होता गया।

चन्द्र मास में भी सुधार होता गया और वह 29.53 दिनों का हो गया। विभिन्न खगोलीय घटनाओं का परस्पर सम्बंध, जैसे पृथ्वी का अपनी धुरी पर घूमना (दिन-रात), चांद का पृथ्वी के इर्द-गिर्द घूमना (माह) और पृथ्वी का सूर्य के आसपास घूमना आदि कैलेण्डरों का आधार बने।

गौरतलब है कि उपरोक्त चर्चा में सरोकार का विषय केवल साल की अवधि है, बाद में देखा गया कि रोज़बरोज़ के इस्तेमाल के लिए यह अवधि काफी लम्बी होती है। यहीं से माह, सप्ताह जैसे कम अवधि के अन्तराल का विचार उपजा। फिर यह भी ज़रूरी था कि साल की शुरुआत के समय पर कोई समझौता हो। उस वक्त हर देश का अपना कैलेण्डर होता था। इससे छोटे समुदायों को तो कोई समस्या नहीं थी लेकिन तब तक रोम साम्राज्य का व्यापार बढ़ना शुरू हो गया था और लोगों की एक से दूसरे राष्ट्र में आवाजाही शुरू हो चुकी थी।

रोम में साल मार्च से शुरू होता जब सर्दियां खत्म हो